

अन्तिम परीक्षा-पत्र का प्रश्न अगर पहले ही मिल जाये तो...!!!

लौकिक विश्वविद्यालय में उसी समय परीक्षा का प्रश्न बताया जाता है लेकिन ईश्वरीय विश्व विद्यालय में परीक्षा के प्रश्नों को पहले से बताया जाता है। अगर लौकिक प्रश्न-पत्र आउट हो जाये तो विद्यार्थी बाहर आ जाते हैं, विरोध करते हैं, हड़ताल करते हैं और परीक्षा फिर से होती है। लेकिन यहाँ बाबा ने बता दिया है कि नष्टोमोहा और स्मृतिर्लब्धा - ये दो हमारे आखिर प्रश्न-पत्र हैं। इनमें जो पास होंगे वही पास विद्वान होंगे। नष्टोमोहा और स्मृतिर्लब्धा हम कैसे होंगे? बाबा कहते हैं कि यह संगम का समय चल रहा है। कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है। संगमयुगी जीवन में आप अतीन्द्रिय सुख प्राप्त कर सकते हैं, बाकी सारा कल्प - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग में सिर्फ सुख प्राप्त कर सकते हैं। इन युगों में धन, यश, पदार्थ, मान, मर्तबा, सांसारिक साधन और क्षणभंगुर सुख-शांति भी हो सकते हैं लेकिन अतीन्द्रिय सुख नहीं होता। सतयुग और त्रेतायुग में सुख तो होता ही है, बाकी द्वापर कलियुग में सुख होता नहीं। इन चारों युगों में अतीन्द्रिय सुख नहीं होता। ज्ञान से, योग से, पवित्रता से, ईश्वरीय शक्ति से, रूहानियत से जो अतीन्द्रिय सुख मिलता है, वह सिर्फ इस पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग पर मिलता है।

दिया? दुःख नहीं दिया तो इसका अर्थ हुआ कि आपने विकर्म नहीं किया परन्तु सुकर्म किया? परमात्मा को कहा जाता है दुःखहर्ता और सुखकर्ता बाबा दुःख दूर भी करता है और सुख भी देता है। इसी प्रकार, आपने दूसरों को दुःख नहीं दिया, बहुत अच्छा; परन्तु उनका दुःख दूर करके सुख दिया? परमात्मा से आपने जो अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति की है उसकी अनुभूति दूसरों को कराई? स्वयं अतीन्द्रिय सुख में तो रहे लेकिन दूसरों को उससे वंचित क्यों किया? हमने पूरे दिन में कोई बुरा काम नहीं किया, निगेटिव नहीं किया आगे के लिए कोई हिसाब-किताब नहीं बनाया, बोझ नहीं चढ़ाया, यह तो अच्छा है।



ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

पवित्रता का सुख सब से श्रेष्ठ सुख है। इसी में ईश्वरीय स्मृति(परमात्मा की याद) की रसना में मन तल्लीन हो जाता है, याद की रसना में डूब जाता है। इस सुख को कई लोग समाधि कहते हैं, कई ऐक्य अवस्था कहते हैं, कई लवलीन अवस्था कहते हैं, वही अतीन्द्रिय सुख है। यह सुख सिर्फ योगी को मिलता है। खाने-पीने से, देखने-करने से जो सुख मिलता है वो यह सुख नहीं, उस सुख को इन्द्रिय सुख कहते हैं। मन को डायरेक्ट परमात्मा से जोड़ने से मन को जो सुख मिलता है उसको इन्द्रियातीत अथवा अतीन्द्रिय सुख कहते हैं। वो सुख केवल संगमयुग के थोड़े से समय में मिलता है। यह सुख अनमोल है, यह कल्प में एक ही बार प्राप्त होता है। जो चीज एक ही बार प्राप्त होती है

उसका मूल्य और महत्त्व बहुत होता है। यह सुख तब मिल सकता है जब आप बाप समान बनें। बाप समान बनने का मतलब है पवित्र बनना और योगी बनना। जीवन में निर्मलता को लाने से और ईश्वरीय स्मृति अथवा बाबा की याद में निरन्तर रहने से यह अतीन्द्रिय सुख प्राप्त होता है। याद में अन्तर पड़ने से मन की स्थिति में भी अन्तर पड़ जाता है। निरन्तर बनने में अन्तर क्यों पड़ता है और उसका निवारण क्या है तथा निरन्तर बनाये रखने में बाधाये क्या हैं और उनका निवारण क्या है - इन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

पढ़ाई में ध्यान रखना और याद रखना बहुत जरूरी होता है। हम बाबा को क्यों भूलते हैं जबकि याद से हमारे जन्म-जन्मान्तर के विकर्म दध होते हैं और हमारा भविष्य भी बनता है? बाबा कहते हैं, बच्चे, अपना चार्ट रखो। हम चार्ट में देखते हैं कि हमने किसी को दुःख तो नहीं दिया और किसी से दुःख तो नहीं लिया? ठीक है, दुःख न दिया और न लिया लेकिन सुख

होती है। हमारे कर्म हमारी स्थिति पर आधारित हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, अन्तर पड़ जाता है और याद निरन्तर नहीं रह सकती। अन्तर क्यों पड़ता है, उसके कई कारण बाबा ने बताये हैं लेकिन हम बच्चे भूल जाते हैं। एक बच्चे की कहानी सुनाते हैं ना! माँ ने अपने बच्चे को कहा, यह 10 रुपये लेकर जाओ और दुकान से 10 रुपये की मूँग की दाल लेकर आओ, मूँग की ही लाना, चने की नहीं। वो बच्चा रास्ते में, 10 रुपये की मूँग की दाल, 10 रुपये की मूँग की दाल कहता गया याद रखने के लिए। बीच रास्ते में कोई खेल चल रहा था उसको देखते हुए रुक गया। थोड़े समय के बाद याद आया कि उसको दुकान जाना है तो फिर चल पड़ा। उस दृश्य को देखने के कारण वह भूल गया कि कौन-सी दाल लेनी है। वह लेकर गया चने की दाल। माँ कहने लगी, मैंने कहा था कि मूँग की दाल, तू ले आया चने की दाल। जिस काम के लिए वह गया था वही भूल गया। उसी प्रकार, बाबा ने भी हमें कहा है कि शिव बाबा को याद करो, देहधारियों को याद न करो। फिर भी हम शिव बाबा को भूल जाते हैं और देहधारियों को याद करते हैं। क्यों ऐसा होता है?

गलती करने पर बच्चों से कान ही क्यों पकड़वाते हैं?

ब दुकानें किसी न किसी न बंद होती हैं लेकिन दो न हमेशा खुले रहते हैं।।दमी सोया हुआ भी होगा ना। भी ये दुकान-दोकान खुले होते हैं। आँखें बंद कर सकते हैं, मुँह बंद कर सकते हैं किन कानों को कभी बन्द ही करते। जब हम दो कानों दूसरों की व्यर्थ बातें सुनते जिसको बाबा झरमुई-झगमुई हते हैं तो इससे हमारा समय, कि सब व्यर्थ चला जाता है।।लिए हम अपने कान ठीकाम में लगा दें। देखिए, स्कूल कोई बच्चा गलती करता है।।उसको कान पकड़ने को हते हैं अथवा उसको मुर्गा नाते हैं। उसमें भी उस बच्चे

को अपने ही कानों को पकड़ना पड़ता है। व्यक्ति अपनी की हुई गलती पर माफी मांगने के लिए अपने कान खुद पकड़ता है। सारा शरीर पड़ा है, फिर भी कानों को क्यों पकड़वाते हैं? क्योंकि कोई भी व्यक्ति बुरा सोचता है, बुरा बोलता है और बुरा करता है लेकिन उसमें पहले उसने बुरा सुना होता है। बुरा सुनना ही सब बुराइयों की बुनियाद है। अगर वह बुरा सुनेगा नहीं तो उसकी बुद्धि बुरे की तरफ जायेगी ही नहीं। तो पहले दो कानों रूपी दुकान को बंद करना है। अगर मोहल्ले में कोई दंगा होता है तो सबसे पहले दुकान ही बंद करते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं बुरा सुनना, व्यर्थ सुनना बन्द करो। बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो। पहले कहा जाता है, बुरा मत सुनो। सुनने से सबकुछ गड़बड़ होता है। बाबा कहते हैं मेरी बातें ही सुनो, देखो और बोलो। बच्चों को कान पकड़वाते हैं कि आगे से ऐसी बात नहीं सुनूँगा। निरन्तर याद में अन्तर आने का एक कारण है बुरा अथवा व्यर्थ बातें सुनना।

याद निरन्तर क्यों नहीं रहती...

जैसी हमारी स्थिति होती है वैसी हमारी कृति



ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजित समर कैम्प में संस्थान के महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन, ओआरसी की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी, डॉ. रूप सिंह, सीआरपीएफ के डिप्टी कमांडेंट विनेश कुमार त्यागी, मानेसर इंडस्ट्रीज के प्रेसिडेंट पवन यादव, स्पिंग ओवरसीज के एमडी सतीश अनेजा एवं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विजय दीदी ने बच्चों का मार्गदर्शन किया एवं बच्चों को विभिन्न एक्टिविटीज कराई गई। कार्यक्रम में दिल्ली एवं एनसीआर के 200 से अधिक बच्चे शामिल रहे।



वाराणसी-उ.प्र.। मिशन 'शक्ति' के तहत महिला सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलंबन हेतु महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रण पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'राजयोग शिविर' एवं 'सकारात्मक चिंतन और राजयोग' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. विपिन भाई, ब्र.कु. तापोषी बहन, महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ नोडल अधिकारी डॉ. निशा सिंह, ब्र.कु. राधिका बहन, सारनाथ, ब्र.कु. सरिता बहन आदि उपस्थित रहे।



सिरसागंज-उ.प्र.। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मैनपुरी जिला अधिकारी अविनाश कृष्ण को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज दीदी। साथ हैं ब्र.कु. गीताजलि बहन, ब्र.कु. शशि बहन व अन्य।



मोहाली-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज के सुख शान्ति भवन फेज-7 में बच्चों के व्यक्तित्व विकास हेतु आयोजित समर कैम्प में प्रतिभागी बच्चों को आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने के साथ ही विभिन्न एक्टिविटीज कराई गई।